यह कभी न हो

अगर इन्सानियत को इन्सानियत से होता प्यार।

तो यूं न लुटते आज भरे बाजार,।।

यूं न लगते लाशों के ढेर।

यूं न मनाया जाता खून की होली का त्योहार।।

आज अगर समझ में आ गया होता जिन्दगी का अर्थ।

तो यूं न उजाड़ दिये जाते स्त्रियों के सुहाग।।

यूं न बच्चों की मुस्कुराहट को छीन लिया जाता।

यूं न की जाती मासूमों पर गोलियों की बौछार।।

अब तो इस संसार से मानवता उठ चुकी है।

हर इन्सान की इन्सानियत बिक चुकी है।।

नाविक को पार लगाने वाली नाव ही डूब चुकी हैं।

दूसरों को उपदेश देने वाला, खुद ही है बुरे कामों को करने का शिकार।।

ऐसे समय में यहीं सोचता हूं मैं, यह सब कभी न होता।

अगर इन्सानियत को इन्सानियत से होता प्यार।।

****

गुरुदीप सिंह दुआ, तकनीशियन